• बाल कविताएं...

अगर नहीं मैं होता...

इस बेढंगी-सी दुनिया में
अगर नहीं मैं होता,
सोचो, दुनिया कैसी लगती
और मेरा क्या होता?
दूर किसी ग्रह के कोने में
बैठा तब मैं रोता,
अथवा कहीं अंधेरे में, मैं
पड़ा-पड़ा तब सोता।
अध्यापक तब कक्षा में फिर-
मुर्गा किसे बनाते,
और बनाकर मुर्गा, किससे
कुकडूं-कूं करवाते?
मां किसके तब कान खींचती
पापा कब दुलराते,
दादा-दादी किसे प्यार से
अपने पास बुलाते?
तुम बच्चों की खातिर तब फिर-
लिखता कौन कहानी,
और सुनाता गीत कौन तब
सुंदर और लासानी।
लिख-लिखकर तब कौन सैकड़ों
पन्ने काले करता
उन पन्नों से संपादक का
दफ्तर कैसे भरता।

■ पीयूष वर्मा

अपना पाठ सुनाओ...

हुआ सवेरा ची ची करते
नन्हे पंछी बोले -
उठ जा गुड्डू, मुन्नू, पप्पू
अपना मुखड़ा धो ले॥
सूरज की किरणों ने तब
अपना घूंघट सरकाया।
हंस कर बोली भैया अब
खाने का नंबर आया॥
इठला कर तब कहा हवा ने
बस्ता चलो उठाओ।
खोल किताबें पढ़ने बैठो
अपना पाठ सुनाओ॥

■ रंजना वर्मा

• चुटकुले...

टीचर– बस के ड्राइवर और कंडक्टर में क्या फर्क है?
स्टूडेंट– कंडक्टर सोया तो किसी का टिकट नहीं कटेगा, ड्राइवर सोया तो, सबका टिकट कट जाएगा।

एक अमेरिकी डॉक्टर भारत आया। बस स्टैंड पर एक किताब देखते ही उसे दिल का दौरा प? गया. 20 रुपये की इस किताब का नाम था?
30 दिनों में डॉक्टर कैसे बनें।

• जानकारी...

एस्टेरॉयड का साइज कैसे नापते हैं

अंतरिक्ष की दुनिया रहस्यों से भरी है, ये बात तो हम सभी जानते हैं। इन्हीं रहस्यों को सुलझाने के लिए वैज्ञानिक लगातार काम भी कर रहे हैं। लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि वैज्ञानिक स्पेस में घूमने वाले एस्टेरॉयड का साइज कैसे नापते हैं। आज हम आपको बताएंगे कि इसकी रफ्तार मापने के लिए किस यंत्र का इस्तेमाल किया जाता है।

धरती पर बढ़ रहा संकट- बता दें कि यूरोपीय स्पेस एजेंसी के मुताबिक वैज्ञानिकों ने एक ऐसा एस्टेरॉयड खोजा है, जिसके पृथ्वी से टकराने का खतरा है। इस एस्टेरॉयड का नाम 2024 YRy है। 22 दिसंबर 2032 को इसके हमारे ग्रह से टकराने की 2.2 फीसदी संभावना है। वहीं नए आकलन के बाद इसका जोखिम 1.2 फीसदी बढ़ गया है। इसको लेकर खगोलविदों को डर है कि जैसे-जैसे अवलोकन साझा किया जाएगा, वैसे-वैसे खतरे का प्रतिशत भी बढ़ सकता है।

एस्टेरॉयड को लेकर रिसर्च जारी-गौरतलब है कि इससे पहले जब एस्टेरॉयड एपोफिस को 2004 में जब खोजा गया था, तो इसके पृथ्वी से टकराने की सबसे ज्यादा संभावना थी। लेकिन 2021 में वैज्ञानिकों ने कक्षा के सटीक विश्लेषण के बाद अपनी राय को संशोधित किया था। बता दें कि खगोलविद 2024 YRy का जितना ज्यादा निरीक्षण करेंगे, वे इसके आकार और ट्रैजेक्टरी के बारे में जानकारी अपडेट करते रहेंगे। इसको लेकर स्पेस एजेंसी ने भी कहा है कि जितना ज्यादा हम अवलोकन करते हैं, उतना ही ज्यादा हम एस्टेरॉयड की ट्रैजेक्टरी को समझ सकते हैं। वैज्ञानिकों ने कहा कि इससे हम यह समझ पाएंगे कि एस्टेरॉयड के पृथ्वी से टकराने या दूर होने की कितनी संभावना कितनी है।

कैसे नापी जाती है एस्टेरॉयड की रफ्तार-अब सवाल ये है कि वैज्ञानिक आखिर कैसे किसी एस्टेरॉयड की रफ्तार मापते हैं। आज हम आपको उसके बारे में बताएंगे। बता दें कि वैज्ञानिक कोणीय वेग का इस्तेमाल किसी वस्तु की गति को समझने और उसका अभिकेन्द्रीय त्वरण निकालने में किया जाता है। बता दें कि कोणीय वेग, घूमने वाली किसी वस्तु की स्थिति में बदलाव की दर को कहते हैं। इसे रेडियन प्रति सेकंड में मापा जाता है।

एस्टेरॉयड से मच सकती है तबाही-कई बार ये सवाल सामने आता है कि क्या धरती पर एस्टेरॉयड से तबाही मच सकती है? इसका जवाब है हां। बता दें कि साल 1908 में साइबेरिया के तुंगुस्का नदी क्षेत्र में 30 मीटर चौड़ा एस्टेरॉयड गिरा था, जिससे 2,150 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का जंगल तबाह हो गया था। वहीं साल 2013 में रूस के चेल्याबिंस्क में 20 मीटर चौड़ा एस्टेरॉयड वायुमंडल में विस्फोट हुआ था। इससे 1,000 से ज्यादा लोग घायल हुए और 7,000 इमारतें तबाह हुई हैं। एस्टेरॉयड के खतरों से निपटने के लिए कई तरह के सिस्टम तैयार किये गये हैं।

• पंचतंत्र की कहानी

हमेशा सोच समझ कर काम करो

प्रधान भिक्षु ने नाई से कहा– 'तुम शायद हमारी भिक्षा के नियमों से परिचित नहीं हो। हम उन ब्राह्मणों के समान नहीं हैं जो भोजन का निमन्त्रण पाकर गृहस्थों के घर जाते हैं।

हम भिक्षु हैं, जो यथेच्छा से घूमते–घूमते किसी भी भक्तश्रावक के घर चले जाते हैं और वहां उतना ही भोजन करते हैं जितना प्राण धारण करने मात्र के लिये पर्याप्त हो। अतः, हमें निमन्त्रण न दो। अपने घर जाओ, हम किसी भी दिन तुम्हारे द्वार पर अचानक आ जायेंगे...'

गतांक से आगे...

सुबह उठकर वह भिक्षुओं की खोज में निकला। पास ही एक भिक्षुओं का मन्दिर था। मन्दिर की तीन परिक्रमायें करने और अपनी मनोरथसिद्धि के लिये भगवान बुद्ध से वरदान मांगने के बाद वह मन्दिर के प्रधान भिक्षु के पास गया, उसके चरणों का स्पर्श किया और उचित वन्दना के बाद यह विनम्र निवेदन किया कि- 'आज की भिक्षा के लिये आप समस्त भिक्षुओं समेत मेरे द्वार पर पधारें।'

प्रधान भिक्षु ने नाई से कहा- 'तुम शायद हमारी भिक्षा के नियमों से परिचित नहीं हो। हम उन ब्राह्मणों के समान नहीं हैं जो भोजन का निमन्त्रण पाकर गृहस्थों के घर जाते हैं। हम भिक्षु हैं, जो यथेच्छा से घूमते-घूमते किसी भी भक्तश्रावक के घर चले जाते हैं और वहां उतना ही भोजन करते हैं जितना प्राण धारण करने मात्र के लिये पर्याप्त हो। अतः, हमें निमन्त्रण न दो। अपने घर जाओ, हम किसी भी दिन तुम्हारे द्वार पर अचानक आ जायेंगे।'

नाई को प्रधान भिक्षु की बात से कुछ निराशा हुई, किन्तु उसने नई युक्ति से काम लिया। वह बोला- 'मैं आपके नियमों से परिचित हूं, किन्तु मैं आपको भिक्षा के लिये नहीं बुला रहा। मेरा उद्देश्य तो आपको पुस्तक-लेखन की सामग्री देना है। इस महान कार्य की सिद्धि आपके आये बिना नहीं होगी।' प्रधान भिक्षु नाई की बात मान गया। नाई ने जल्दी से घर की राह ली। वहां जाकर उसने लाठियां तैयार कर लीं, और उन्हें दरवाजे के पास रख दिया। तैयारी पूरी हो जाने पर वह फिर भिक्षुओं के पास गया और उन्हें अपने घर की ओर ले चला। भिक्षु-वर्ग भी धन-वस्त्र के लालच से उसके पीछे-पीछे चलने लगा। भिक्षुओं के मन में भी तृष्णा का निवास रहता ही है। जगत के सब प्रलोभन छोड़ने के बाद भी तृष्णा संपूर्ण रूप से नष्ट नहीं होती। उनके देह के अंगों में जीर्णता आ जाती है, बाल रुखे हो जाते हैं, दांत टूट कर गिर जाते हैं, आंख-कान बूढ़े हो जाते हैं, केवल मन की तृष्णा ही है जो अन्तिम श्वास तक जवान रहती है।

उनकी तृष्णा ने ही उन्हें ठग लिया। नाई ने उन्हें घर के अन्दर लेजाकर लाठियों से मारना शुरु कर दिया। उनमें से कुछ तो वहीं धराशायी हो गये, और कुछ का सिर फूट गया। उनका कोलाहल सुनकर लोग एकत्र हो गये। नगर के द्वारपाल भी वहाँ आ पहुँचे। वहाँ आकर उन्होंने देखा कि अनेक भिक्षुओं का मृतदेह पड़ा है, और अनेक भिक्षु आहत होकर प्राण-रक्षा के लिये इधर-उधर दौड़ रहे हैं।

नाई से जब इस रक्तपात का कारण पूछा गया तो उसने मणिभद्र के घर में आहत भिक्षु के स्वर्णमय हो जाने की बात बतलाते हुए कहा कि वह भी शीघ्र स्वर्ण संचय करना चाहता था। नाई के मुख से यह बात सुनने के बाद राज्य के अधिकारियों ने मणिभद्र को बुलाया और पूछा कि- 'क्या तुमने किसी भिक्षु की हत्या की है?'

मणिभद्र ने अपने स्वप्न की कहानी आरंभ से लेकर अन्त तक सुना दी। राज्य के धर्माधिकारियों ने उस नाई को मृत्युदण्ड की आज्ञा दी । और कहा-ऐसे 'कुपरीक्षितकारी'- बिना सोचे काम करने वाले के लिये यही दण्ड उचित था। मनुष्य को उचित है कि वह अच्छी तरह देखे, जाने, सुने और उचित परीक्षा किये बिना कोई भी कार्य न करे अन्यथा उसका वही परिणाम होता है जो इस कहानी के नाई का हुआ।

■ समाप्त

• रोचक...

गुलाब

धरती पर असंख्य प्रकार के फूल होते हैं। इसमें से कुछ फूलों की डिमांड दुनियाभर में होती है। लेकिन आज हम आपको एक ऐसे फूल के बारे में बताने वाले हैं, जिसका इस्तेमाल प्रेम–शादी से लेकर चुनावी समय में भी होता है। गुलाब एक ऐसा फूल है, जिसका इस्तेमाल हर मौसम और समय पर होता है। लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि किस देश में इसकी खेती सबसे अधिक होती है। गुलाब के फूलों की खेती भारत मे भरपूर होती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक देश में सबसे ज्यादा गुलाब की खेती करने वाले प्रदेश में कर्नाटक टॉप पर है। रिपोर्ट के मुताबिक कर्नाटक ने 2022 में फूलों का उत्पादन 1,71,880 टन कर दोगुना कर लिया है, जो 2018 के 76,910 टन से बहुत ज्यादा है। इक्काडोर दुनिया के सबसे सुंदर और बड़े गुलाबों के उत्पादन के लिए जाना जाता है। बता दें कि यहां के गुलाब अपने बड़े आकार और गहरे रंगों के लिए प्रसिद्ध हैं।

• केले का पेड़...

किसी भी दूसरे फलों के पेड़ों की तुलना में केले को बढ़ने में 90–120 दिन लगते हैं। बता दें कि केले की परिपक्वता का पता लगाने के लिए इसके ऊपरी पत्तों के सूखने, रंग में बदलाव, और पुष्प सिरे के गिरने पर ध्यान दें। लेकिन आम तौर पर देखा गया है कि केले को तैयार होने में 120 दिन लग जाता है। केले के पौधे काफी लंबे और सामान्य रूप से काफी मजबूत होते हैं। इतना ही नहीं कई बार दूर से देखने पर लोग इसे वृक्ष समझ लेते हैं।